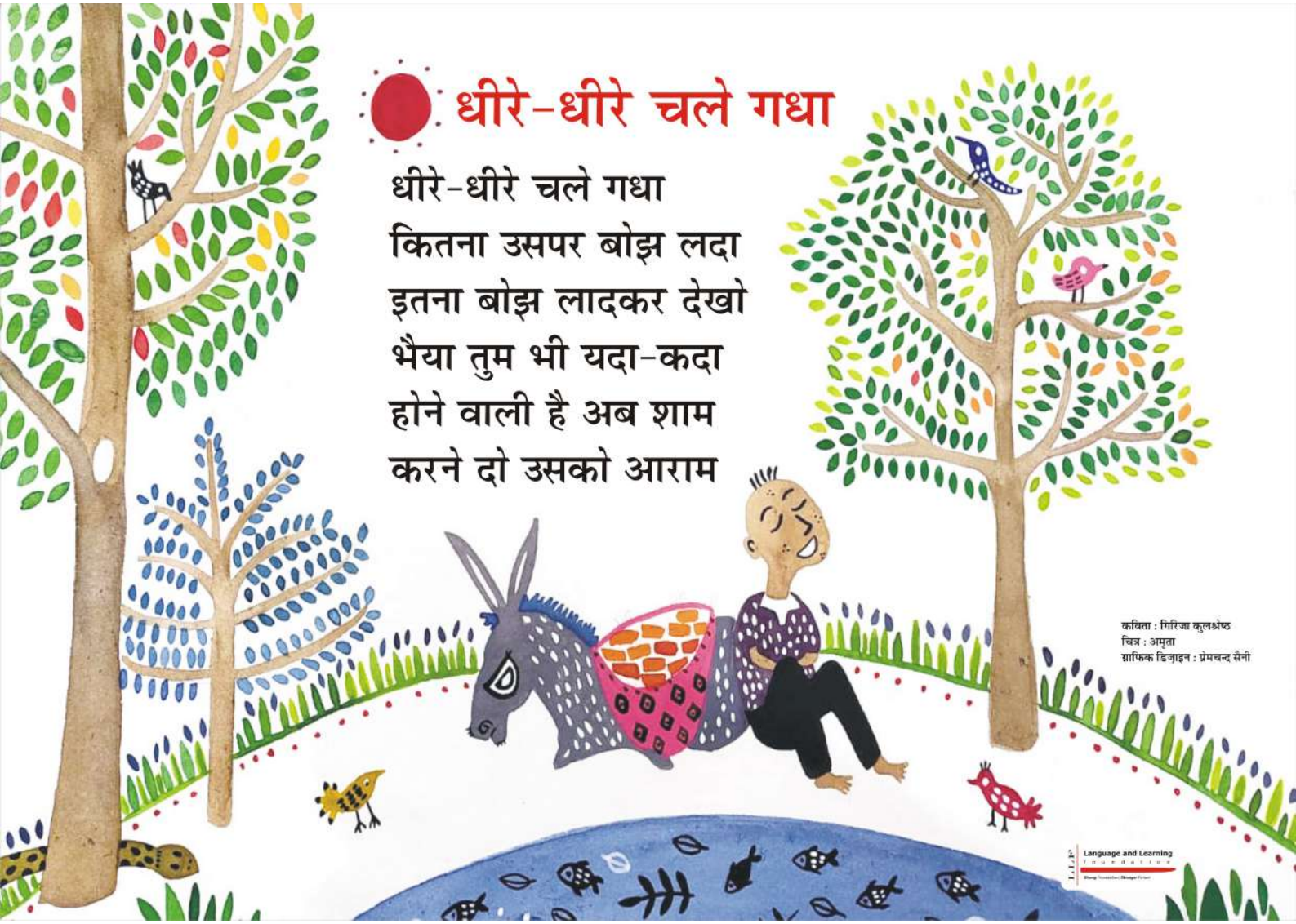

धीरे-धीरे चले गधा
धीरे-धीरे चले गधा
कितना उसपर बोझ लदा
इतना बोझ लादकर देखो
भैया तुम भी यदा-कदा
होने वाली है अब शाम
करने दो उसको आराम
कविता : गिरिजा कुलश्रेष्ठ
चित्र : अमृता
ग्राफिक डिज़ाइन : प्रेमचन्द सैनी
Language and Learning Foundation